उत्पन्ना एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Utpanna Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 38, controlling revision 336361. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 38 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 38 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.38.1–118, Sanskrit Wikisource revision 336361, not a transcription of the original text.

चार महाद्वादशी नाम

KATHA 6.38.1–17

महादेव नारद को बताते हैं कि वे पहले विष्णु के पास द्वादशी का माहात्म्य सुनने गए थे। नारद महाद्वादशी के भेद पूछते हैं। शुक्ल एकादशी और पुनर्वसु का योग जया कहलाता है; शुक्ल द्वादशी और श्रवण का योग विजया, प्राजापत्य का योग जयन्ती और पुष्य का योग पापनाशिनी कहा जाता है। विजया में दान, भोजन, होम और उपवास का हजार गुना फल तथा पापनाशिनी का वर्षभर प्रतिदिन तिल देने के समान फल वर्णित है। ये नक्षत्र-संबंधी नाम हैं, अपने-आप वार्षिक जया या विजया उत्सव की तिथियाँ नहीं।

सगर, ककुत्स्थ और नहुष जैसे राजाओं की विष्णु-पूजा का उल्लेख है। सात जन्मों के मन, वाणी और शरीर के पाप मिटने तथा हजार एकादशियों के फल की प्रशंसा आती है। स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय और पूजा का अक्षय पुण्य कहा जाता है। यह धार्मिक माहात्म्य है; इसके आधार पर पंचांग का दिन, समय या अनिवार्य खर्च नहीं बनाया जाता।

Mahadeva tells Narada that he once visited Vishnu to hear Dwadashi's greatness. Narada asks about Mahadwadashi's forms. Bright Ekadashi joined with Punarvasu is called Jaya; bright Dwadashi joined with Shravana is Vijaya, with Prajapatya Jayanti, and with Pushya Papanashini. Gifts, feeding, offerings and fasting on Vijaya are assigned thousandfold merit; Papanashini is compared with giving sesame daily for a year. These are nakshatra-linked names, not automatically the dates of the annual Jaya or Vijaya festival hubs.

Vishnu worship by kings including Sagara, Kakutstha and Nahusha is mentioned. The discourse praises removal of mental, spoken and bodily sin across seven births and the reward of a thousand Ekadashis. Bathing, gifts, repetition, offerings, study and worship are assigned inexhaustible merit. This is religious praise; it does not establish a calendar date, clock time or required expenditure.

प्रारम्भिक नियम और उनकी सीमाएँ

KATHA 6.38.18–34

पाँचवें अश्वमेध के बाद युधिष्ठिर कृष्ण से उपवास, नक्त और एकभुक्त का फल पूछते हैं। चुना संस्कृत आरम्भ के लिए मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी कहता है; इसे चुपचाप एकादशी नहीं किया गया। दशमी पर एक भोजन और नक्त के लिए दिन के आठवें भाग की चर्चा है। गृहस्थ के लिए नक्षत्र-दर्शन का पद आता है, जबकि अंग्रेज़ी तुलना तारों के दिखाई देने से पहले कहती है; यति के लिए दिन का आठवाँ भाग और रात्रि-भोजन न करने का उल्लेख है। यह स्रोत का विवरण है, घर के लिए निकाला गया समय नहीं।

सुबह के नियमों के बाद मध्याह्न स्नान में कुआँ, वापी, तालाब और नदी का क्रम आता है। जल-जीवों को हानि से पुण्य और पाप समान हो जाने की चेतावनी के साथ घर में स्वच्छ जल से स्नान की प्रशंसा भी है। मिट्टी की प्रार्थना में घोड़े, रथ और विष्णु से स्पर्शित भूमि द्वारा पुराने पाप दूर होने का आशय है; कोई अलग अनिवार्य मंत्र नहीं दिया गया।

क्रोध और लोभ त्यागने के साथ पाठ अन्त्यज, पाखंडी, झूठे, ब्राह्मण-निंदक तथा अनुचित संबंध या परधन लेने वालों से दूरी की प्राचीन भाषा कहता है। अंग्रेज़ी का शूद्र पद मूल के अन्त्यज का समान पाठ नहीं माना गया। जन्म-आधारित बहिष्कार का समर्थन नहीं होता। केशव की पूजा, नैवेद्य, दीप, संयम, गायन सहित जागरण, द्विजों को दान, प्रणाम और क्षमा-याचना आते हैं। शुक्ल और कृष्ण पक्ष समान कहे जाते हैं। भोजन, पानी, विश्राम और आवश्यक देखभाल न रोकें; उपवास, रातभर जागना या दान जरूरी नहीं। दीप जलाएँ तो निगरानी रखें और सोने से पहले बुझाएँ।

After the fifth Ashvamedha, Yudhishthira asks Krishna about fasting, nakta and one-meal observance. The selected Sanskrit names Margashirsha's dark Dwadashi as the starting point; it is not silently changed to Ekadashi. It discusses one meal on Dashami and the day's eighth portion for nakta. For householders it uses star-sighting wording, whereas the English comparison says before stars appear; for ascetics it mentions the day's eighth portion and no night meal. These are narrated source details, not calculated household timings.

After morning observances, midday bathing is discussed through wells, stepped reservoirs, tanks and rivers. A warning that harming aquatic creatures balances merit with wrongdoing accompanies praise of bathing at home with clean water. The earth prayer recalls ground touched by horses, chariots and Vishnu as removing former sin; no isolated compulsory formula is supplied.

Alongside abandoning anger and greed, the text uses ancient avoidance language about antyaja, religious pretenders, liars, critics of Brahmins, improper relationships and taking others' property. The English term Shudra is not treated as identical to the Sanskrit antyaja. Birth-based exclusion is not endorsed. Worship of Keshava, food offerings, lamps, restraint, a vigil with singing, gifts to dvijas, bows and requests for forgiveness follow. Bright and dark fortnights are treated equally. Do not withhold food, water, rest or necessary care; fasting, sleeplessness and gifts are optional. Attend any lit lamp and extinguish it before sleeping.

पूरे फल-विवेचन का आशय

KATHA 6.38.35–48

शंखोद्धार में स्नान और गदाधर-दर्शन तथा संक्रांति पर चार लाख दान भी एकादशी के सोलहवें भाग से कम बताए जाते हैं। प्रभास में सूर्य या चन्द्र ग्रहण का पुण्य तुलनीय कहा जाता है। केदार के जल से पुनर्जन्म न होने और एकादशी से गर्भवास मिटने का कथन जन्म-मुक्ति की धार्मिक भाषा है, गर्भावस्था को हानि या चिकित्सा का निर्देश नहीं।

अश्वमेध से सौ गुना फल, यतियों और द्विजों को भोजन के समान पुण्य तथा वेदान्तज्ञ को हजार गाय देने से सौ गुना फल की चर्चा आती है। लोगों के शरीरों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर का स्मरण है; श्रद्धा से हरि की पूजा का फल देवताओं के लिए भी गिनना कठिन कहा जाता है। चुना संस्कृत नक्त को उपवास का आधा और एकभुक्त को नक्त का आधा फल देता है। तीर्थ, दान और नियम की प्रशंसा एकादशी उपवास के सामने शांत होने का रूपक है। कृष्ण युधिष्ठिर को यह श्रेष्ठ, गोपनीय व्रत बताते और हजार यज्ञों से भी इसकी तुलना न होने की स्तुति करते हैं।

यह कथात्मक पुण्य-गणना है, व्यक्ति का मूल्य, वास्तविक प्रतिफल या खरीद और दान का लक्ष्य नहीं। भोजन-विधियों की यह तुलना किसी को भूखा रहने या देखभाल छोड़ने के लिए बाध्य नहीं करती।

Bathing at Shankhoddhara and seeing Gadadhara, and four hundred thousand gifts at Sankranti, are described as less than one-sixteenth of Ekadashi's reward. Merit at Prabhasa during solar or lunar eclipse is compared with it. Freedom from rebirth through Kedara's water and ending womb-dwelling through Ekadashi are religious liberation language, not instructions to harm pregnancy or provide medical treatment.

The passage discusses a hundredfold Ashvamedha reward, merit comparable with feeding ascetics and dvijas, and a hundredfold reward compared with giving a thousand cows to a Vedanta-knower. It recalls Brahma, Vishnu and Maheshvara in people's bodies; gods themselves are said to struggle to count faithful Hari worship's reward. The selected Sanskrit assigns nakta half fasting's merit, and one-meal observance half nakta's. Praise of pilgrimage, gifts and observances falling silent before Ekadashi fasting is a metaphor. Krishna presents this supreme, confidential vow to Yudhishthira and praises it as beyond comparison with a thousand sacrifices.

This narrative merit reckoning is not a measure of personal worth, a real-world return or a purchasing or donation target. These comparisons do not require anyone to go hungry or abandon care.

मुर का आक्रमण और देवताओं की प्रार्थना

KATHA 6.38.49–75

युधिष्ठिर पूछते हैं कि एकादशी कैसे उत्पन्न हुई और विष्णु को इतनी प्रिय क्यों है। कृष्ण कृतयुग के भयंकर, मृत्यु-समान मुर की कथा कहते हैं। उसने इन्द्र और देवताओं को जीतकर स्वर्ग से निकाल दिया; वे पृथ्वी पर भटकते हैं। चिंतित इन्द्र महादेव से आश्रय माँगते हैं। शिव गरुड़ध्वज विष्णु की शरण सुझाते हैं, जो जल में शयन कर रहे हैं।

इन्द्र देवों और असुरों के रक्षक, कमलनयन मधुसूदन जनार्दन की स्तुति करते हैं। वे विष्णु को बुद्धि के स्वामी, सृष्टिकर्ता, कारण, माता, पिता और आश्रय कहते और शरणागतों की रक्षा चाहते हैं। भगवान शत्रु का रूप, बल, निवास, शक्ति और वर पूछते हैं। इन्द्र ब्रह्मा के वंश के तालजंघ का पुत्र मुर और चन्द्रावती नगर बताते हैं। मुर ने इन्द्र, वायु, अग्नि, चन्द्र, सूर्य और वरुण के स्थान ले लिए हैं; देव-जगत उजड़ गया है।

विष्णु उसे मारने का संकल्प करके देवों सहित चन्द्रावती जाते हैं। मुर की गर्जना और युद्ध देखकर देव दस दिशाओं में भागते हैं। मुर भगवान को रुकने की चुनौती देता है और विष्णु अपनी भुजाओं से युद्ध स्वीकारते हैं। यह धार्मिक युद्ध-कथा है, वास्तविक व्यक्तियों या समुदायों के विरुद्ध हिंसा का समर्थन नहीं।

Yudhishthira asks how Ekadashi arose and why Vishnu holds it so dear. Krishna tells of terrifying, death-like Mura in the Krita age. He defeated Indra and the gods, expelled them from heaven and left them wandering earth. Worried Indra seeks Mahadeva's refuge. Shiva recommends Vishnu, whose banner bears Garuda and who is resting in the waters.

Indra praises lotus-eyed Madhusudana Janardana, protector of gods and asuras. He calls Vishnu ruler of understanding, creator, cause, mother, father and refuge, seeking protection for those who surrender. The Lord asks the enemy's form, strength, dwelling, power and boon. Indra identifies Mura, son of Talajangha in Brahma's line, and Chandravati city. Mura has assumed the positions of Indra, wind, fire, moon, sun and Varuna; the divine world is devastated.

Vishnu resolves to defeat him and goes with the gods to Chandravati. At Mura's roar and the battle, gods flee in ten directions. Mura challenges the Lord to stop, and Vishnu accepts combat with his arms. This is religious battle narrative, not support for violence against real people or communities.

गुफा में एकादशी का प्राकट्य

KATHA 6.38.76–93

विष्णु के बाण और चक्र से मुर की सेना नष्ट होती है, पर अकेला मुर लड़ता रहता है। दोनों का बाहुयुद्ध हजार दिव्य वर्षों तक चलता है। चिंतित विष्णु बदरिकाश्रम की सिंहवती गुफा में जाते हैं। पाठ उसे बारह योजन विस्तार और एक प्रवेश-द्वार वाली कहता है; इसे आधुनिक यात्रा-स्थल या दूरी में नहीं बदला गया। थके भगवान योगमाया से विश्राम करते हैं। पीछा करता मुर उन्हें सोते में मारना चाहता है।

भगवान के शरीर से तेजस्वी कन्या निकलती है और दिव्य अस्त्रों सहित उससे युद्ध करती है। चुना पाठ उसके हुंकार से मुर को भस्म होना कहता है; तलवार से सिर काटने का लोकप्रिय दृश्य नहीं जोड़ा गया। जागकर विष्णु आश्चर्य से मुर का वध करने वाले को पूछते हैं। कन्या बताती है कि इसने देव, गन्धर्व, यक्ष, उरग और राक्षसों को तीन लोकों से निकाल दिया था, और सोते भगवान को मारने आया था।

भगवान पूछते हैं कि उनके विजेता को उसने कैसे हराया। एकादशी इसे भगवान की कृपा कहती है। कृष्ण के प्रथम-पुरुष कथन को बदलने के लिए अंग्रेज़ी टिप्पणी का प्रस्तावित सर्वनाम-संशोधन नहीं अपनाया गया।

Vishnu's arrows and discus destroy Mura's army, but Mura continues alone. Their hand-to-hand battle lasts a thousand divine years. Concerned Vishnu enters Simhavati cave at Badarikashrama. The text describes twelve yojanas and one entrance; this is not converted into a modern travel site or distance. Exhausted, the Lord rests through Yogamaya. Pursuing Mura intends to kill him asleep.

A radiant maiden emerges from the Lord's body and fights with divine weapons. The selected text has her humkara turn Mura to ashes; no popular sword-beheading scene is added. Waking, Vishnu asks in wonder who killed him. The maiden explains that Mura expelled gods, gandharvas, yakshas, uragas and rakshasas from the three worlds and came to kill the sleeping Lord.

The Lord asks how she defeated his conqueror. Ekadashi credits his grace. The English note's proposed pronoun emendation is not applied to alter Krishna's first-person narration.

वरदान और पूरा अंतिम उपदेश

KATHA 6.38.94–118

तीन लोकों के देव और मुनि प्रसन्न होते हैं। विष्णु दुर्लभ वर देने को कहते हैं। कन्या एक वर माँगने से पहले तीन बार आश्वासन लेती है। तीन लोक और चार युगों में तीर्थों में प्रधान होने, विघ्न दूर करने तथा भक्तों की कामना पूरी करने का वर चाहती है। उपवास, नक्त और एक भोजन करने वालों के धन, धर्म और मोक्ष का कथन आता है। भगवान सहमत होते हैं; कार्तिक के भक्त, चार युग और तीन लोक का उल्लेख है। भगवान एकादशी को शक्ति मानते हैं और उसका व्रत करते हुए अपनी पूजा करने वालों को मुक्तिगामी कहते हैं।

तृतीया, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और एकादशी भगवान को प्रिय कही जाती हैं। तीन बार आश्वासन से एकादशी संतुष्ट होती है; शत्रु-नाश, परम गति, विघ्न-निवारण और इच्छापूर्ति का माहात्म्य कहा जाता है।

यह वास्तविक शत्रुओं को हानि पहुँचाने का निर्देश नहीं। दोनों पक्ष समान हैं और कथा दिन या रात सुनी जा सकती है।

आगे त्रिस्पृशा में थोड़ा एकादशी, पूरी द्वादशी और अंत में त्रयोदशी के संबंध का विवरण तथा हजार एकादशियों और पारण के बढ़े पुण्य की चर्चा है। अष्टमी, एकादशी, षष्ठी, तृतीया और चतुर्दशी के पूर्वविद्ध तथा परविद्ध भेद आते हैं। दिन-रात एकादशी और अगली सुबह घटी वाले प्रसंग को छोड़ने और द्वादशी-संबंध वाली तिथि लेने का पाठीय निर्देश आता है। अंग्रेज़ी व्याख्या का सूर्योदय शब्द संस्कृत में स्वतः नहीं जोड़ा गया। यह तकनीकी वर्णन कोई नया पंचांग निर्णय या घड़ी का समय नहीं बनाता।

गरुड़ध्वज विष्णु का पद, भक्त का कल्याण, पढ़ने से हजार गायों के दान-समान पुण्य और ब्रह्महत्या जैसे पापों से मुक्ति की प्रशंसा है। अंतिम पद विष्णुधर्म और गीतार्थ की अतुलनीयता कहता है; अंग्रेज़ी तुलना से नया संप्रदायगत श्रेष्ठता-दावा नहीं लिया गया। एकादशी को पाप-नाशक व्रतों में अतुलनीय कहने वाली अंतिम प्रशंसा भी आती है। अलग समापन अध्याय 38 को उत्तरखण्ड के उमा–महेश्वर संवाद में एकादशी-उत्पत्ति और मुर-वध कहता है। सभी 118 क्रमांकित स्थान, अंतिम उपदेश और समापन यहाँ संक्षिप्त मौलिक गद्य में पूरे हैं।

धन, जन्म-मुक्ति और परलोक धार्मिक फल हैं, निश्चित परिणाम नहीं। उपवास, जागरण, दान या खरीद अनिवार्य नहीं; भोजन, पानी, विश्राम और स्वास्थ्य-सहायता जारी रखें। उत्सव की तिथि जुड़े पृष्ठ पर है और यहाँ उसे दोबारा निर्धारित नहीं किया गया।

Gods and sages of the three worlds rejoice. Vishnu offers a rare boon. Before asking, the maiden receives his assurance three times. She requests foremost standing among sacred places across three worlds and four ages, removal of obstacles and fulfilment of devotees' wishes. Wealth, dharma and liberation are discussed for fasting, nakta and one-meal observers. The Lord agrees; Kartika devotees, four ages and three worlds are mentioned. The Lord regards Ekadashi as a power and says those observing its vow while worshipping him proceed to liberation.

Tritiya, Ashtami, Navami, Chaturdashi and Ekadashi are named as dear to the Lord. The threefold assurance satisfies Ekadashi; destruction of enemies, supreme destination, obstacle removal and fulfilment are praised. This does not direct harm to real enemies. Both fortnights are equal and the account may be heard by day or night.

The close describes trisprsha through a portion of Ekadashi, a full Dwadashi and Trayodashi at the end, assigning increased merit through a thousand Ekadashis and breaking the fast. It discusses prior- and later-joined distinctions for Ashtami, Ekadashi, Shashthi, Tritiya and Chaturdashi. The text says to set aside the configuration of a day-and-night Ekadashi with a following morning ghati and choose the Dwadashi-joined tithi. The English explanation's sunrise wording is not automatically added to the Sanskrit. These technical descriptions do not establish a new calendar ruling or clock time.

Vishnu's destination under the Garuda banner, devotees' welfare, reading's merit comparable with a thousand cows and release from sins including Brahmahatya are praised. The last position speaks of incomparable

Vishnu-dharma and Gita meaning; no new sectarian superiority claim is imported from the English comparison. The final praise also calls Ekadashi incomparable among sin-removing vows. The separate colophon identifies chapter 38 as Ekadashi's origin and Mura's death within the Uttara section's Uma–Maheshvara dialogue. All 118 numbered positions, final teaching and colophon are covered here in condensed original prose.

Wealth, freedom from rebirth and afterlife rewards are religious claims, not guarantees. Fasting, vigils, gifts and purchases are optional; food, water, rest and health support continue. The linked hub owns the festival date, which is not redetermined here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Utpanna Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.38.1–118, revision 336361, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.